

॥ देवी दिग्बन्धन स्तोत्र ॥

प्राच्यां रक्षतु माम् एंद्री आग्नेयाम् अग्निदेवता ॥ १७ ॥

दक्षिणेऽवतु वाराही नैऋत्यां खड्गधारिणी ।

प्रतीच्यां वारुणी रक्षेद् वायव्यां मृगवाहिनी ॥ १८ ॥

उदीच्यां रक्ष कौबेरि ईशान्यां शूलधारिणी ।

ऊर्ध्वं ब्रह्माणी मे रक्षेद् अधस्ताद् वैष्णवी तथा ॥ १९ ॥

एवं दश दिशो रक्षेद् चामुण्डा शववाहना ।

इस स्तोत्र का 10 हजार पाठ करने से यह स्तोत्र पूर्ण रूप से जाग्रत एवं सिद्ध हो जाता है!

नवरात्रि में केवल एक हजार पाठ से ही यह सिद्ध होगा !

स्तोत्र में जिस दिशाओं का नाम दिया है, उसी दिशा में पीली सरसों अथवा जल फेंकते हुए स्तोत्र पाठ करें !

आकस्मिक संकट में इस स्तोत्र का 5 बार पाठ करने से रक्षा हो जाती है और नकारात्मकता दूर होती है!

यह स्तोत्र महिलाओं के लिए एक वरदान जैसा है!

संशोधित :

द्वारा,

स्वामी रुपेश्वरानंद आश्रम,

बलुआघाट, जिला - चंदौली - वाराणसी (उत्तर प्रदेश) - 232109

Mo. No.: [+91 -7607 233 230](tel:+91-7607-233-230) ; Email : swamirupeshwar@gmail.com